भारत-चीन संबंध को कायम रखना

लेखक - जोरावर दौलत सिंह (अध्येता, सेंटर फॉर पॉलिसी रिसर्च)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

द हिन्दू

10 अक्टूबर, 2019

"वुहान सम्मेलन का उद्देश्य प्रमुख वैश्विक परिवर्तनों के समय भारत-चीन संबंधों को स्थिर करने से संबंधित था और इसलिए दोनों देशों को आपस में बुनियादी समझ बनाए रखनी चाहिए।"

भारत-चीन संबंधों में अचानक से आई शांति दोनों देशों के बीच वर्षों से चली आ रहे अशांत अध्याय के समाप्त होने का संकेत देती है। 2014 और 2017 के बीच की अवधि में, दोनों देशों की नीतियों और प्रयोजन ने तनाव, अविश्वास और प्रतिस्पर्धा का निर्माण किया था।

वुहान और उसके बाद

पिछले एक दशक से, तीन ऐतिहासिक घटनाएं भारत-चीन संबंधों को आकार दे रही हैं। इनमें से कुछ शक्तियां दोनों देशों को प्रतिस्पर्धा की ओर धकेल रही हैं और कुछ उन्हें सहयोग के माध्यम से आगे की ओर अग्रसर कर रही हैं। इनमें से पहला चरण एक बदलती विश्व व्यवस्था और एशिया का उदय है, एक ऐसा चरण जो आमतौर पर 2008 के वैश्विक आर्थिक संकट के बाद की अवधि को दर्शाता है। दूसरा, पश्चिम की घटती क्षमता और अंतर्राष्ट्रीय और एशियाई मामलों के प्रबंधन के प्रति झुकाव से संबंधित है, जिसमें भारत, चीन और अन्य पुनः उभरती शक्तियां नए शासन संस्थानों और मानदंडों को पूरा करना में अपना योगदान दे रही हैं और इसके लिए इन्हें वैश्विक स्थिरता और सह संरक्षण के लिए समन्वय एवं सहयोग की आवश्यकता होगी। तीसरा, चीन की 2013 और 2014 की बदलती दक्षिण एशिया नीति है, जिसमें उपमहाद्वीप देशों के साथ संबंधों को गहरा करने की घोषणा की गई है और अप्रैल, 2015 में महत्वाकांक्षी बेल्ट एंड रोड पहल तथा चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा परियोजना भी इसी नीति का हिस्सा रही है।

2017 में भारत-चीन संबंधों की जटिलता में सभी तीन कारकों ने योगदान दिया है और दोनों पक्षों ने विरोधी दृष्टिकोण तथा रणनीतियों को अपनाया है। चीन के दक्षिण-पश्चिम परिधि के साथ संबंधों के विस्तार और उस प्रक्रिया के प्रति भारत की धारणा एवं प्रतिक्रिया ही चीन के इस तीखे रुख का कारण बनी है।

कुछ क्रम बनाना

तेजी से बदलते और अनिश्चित अंतर्राष्ट्रीय परिवेश में अपने जटिल संबंधों को निर्देशित करने के लिए दोनों नेताओं ने एक समकालीन ढांचे की खोज की। उदहारण के तौर पर, 1988 में हुआ समझौता, जिसे बहुत ही व्यावहारिक समझ के आधार पर बनाया गया था, जहाँ उनके दशकों पुराने क्षेत्रीय विवाद के बावजूद, दोनों पक्षों ने चहुंमुखी संबंधों को विकसित करने के लिए वार्ता जारी रखी। लेकिन इस समझौते में जो होना चाहिए था वह नहीं था। इस समझौते में एक भूराजनीतिक स्थिति या आने वाले दशकों में रिश्ते को परिभाषित करने वाले मुद्दे और सीमा को विनियमित करने वाले उपायों की कमी थी। वुहान 1.0 कुछ मानदंडों को स्पष्ट करने का एक प्रयास था जो दोनों देशों में नीति निर्माताओं और नौकरशाहों के लिए दिशा निर्देशों के एक नए सेट के रूप में उभर कर सामने आया था। यह पाँच स्तंभों पर बनाया गया था।

भारत और चीन का एक साथ उदय, स्वतंत्र विदेशी नीतियों के साथ दो प्रमुख शक्तियों का जन्म है। वैश्विक व्यवस्था के शक्ति प्रवाह में दोनों देशों के रिश्ते को महत्व मिला है जो वैश्विक स्थिरता के लिए एक सकारात्मक कारक बन गया है। दोनों पक्ष एक-दूसरे

की संवेदनशीलता, चिंताओं और आकांक्षाओं का सम्मान करने के महत्व को पहचानते हैं। दोनों नेता शांति से सीमा का प्रबंधन करने के लिए अपनी संबंधित सेनाओं को रणनीतिक मार्गदर्शन प्रदान करेंगे और अंत में, दोनों पक्ष सामान्य हित के सभी मामलों पर अधिक से अधिक परामर्श के लिए प्रयास करेंगे, जिसमें एक वास्तविक विकास साझेदारी का निर्माण शामिल है।

हालांकि, वुहान दृष्टिकोण को मतभेदों को हल करने में उतनी सफलता नहीं मिली, जितने की अपेक्षा की जा रही थी, इस वजह से इसकी आलोचना भी शुरू हो गई। फिर भी, तथ्य यह है कि दोनों पक्षों ने बहुत अधिक उत्साही स्पर्धा और अविश्वास को समाहित किया है और इसमें कोई संदेह नहीं है कि एक अनिश्चित अंतर्राष्ट्रीय वातावरण ने दोनों पक्षों को इस तरह के विकल्प को चुनने के लिए प्रेरित किया। यह भी दावा किया गया है कि चीन की अमेरिका के साथ रणनीतिक प्रतिस्पर्धा ही भारत के साथ टकराव का कारण बनी। हालांकि, भारत को भी चीन के साथ एक क्षेत्र-व्यापी प्रतिद्वंद्विता में दो मोर्चों पर ध्यान केंद्रित करने से लाभ नहीं होगा। जैसा कि फरवरी 2018 में भारत के विदेश सचिव ने कहा था, भारत को चीन के साथ अपने लिए एक संबंध खोजना और परिभाषित करना है जो हमें अपनी विदेश नीति के उद्देश्यों को बनाए रखने की अनुमति देता है और साथ ही हमें एक ऐसी नीति की अनुमति देता है जो हमारे लिए पर्याप्त है, जो हमें आगे नहीं बढ़ाती है।

तीन-बिंदु रोड मैप

आगे बढ़ते हुए, भारत की चीन नीति को तीन भव्य रणनीतिक लक्ष्यों द्वारा निर्देशित किया जाना चाहिए: (i) एशिया में एक समावेशी सुरक्षा वास्तुकला, जो आर्थिक निर्भरता को बाधित किए बिना बहुध्रुवीयता के लिए एक अहिंसक संक्रमण की सुविधा देती है; (ii) भारतीय और विकासशील अर्थव्यवस्था हितों को बेहतर ढंग से प्रतिबिंबित करने के लिए एक निष्पक्ष और नियम-आधारित खुला अंतर्राष्ट्रीय क्रम और (iii) पड़ोस में भू-राजनीतिक शांति और सतत् आर्थिक विकास। चीन द्वारा इन लक्ष्यों में से प्रत्येक अपनाकर सफल बनाना काफी महत्वपूर्ण है और भारतीय नीति निर्माताओं के सामने मुख्य कार्य एक नीतिगत ढांचे की परिकल्पना और उसका क्रियान्वयन करना है, जो इन तीनों छोरों पर प्रगति की अनुमति देता है।

इतिहासकार ओड अर्ने वेस्टड ने हाल ही में सलाह दी थी कि, जितना अधिक अमेरिका और चीन एक दूसरे को कमजोर साबित करने में लगे रहेंगे, उतना ही अन्य शक्तियों को लाभ कमाने का मौका मिलेगा। हालांकि, इस मंत्र को कोई भी भारत और चीन पर भी समान रूप से लागू कर सकता है। अप्रशिक्षित प्रतियोगिता केवल अन्य शक्तियों को लाभ देती है। भारत-चीन संबंधों में हालिया स्थिरता दोनों पक्षों द्वारा दर्शाई गयी समझदारी है। इतिहास दोनों देशों को उभरती विश्व व्यवस्था को आकार देने के लिए रचनात्मक भूमिका निभाने के लिए बाध्य कर रहा है, यहाँ तक कि यह दोनों पक्षों को एक आम पड़ोस में सह-अस्तित्व सीखने के लिए भी बाध्य कर रहा है।

GS World Committed To Excellence

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. **भारत-चीन के संबंध में दिए गये निम्नलिखित कथनों में से असत्य कथन की पहचान कीजिए:-**

(a) वन बेल्ट, वन रोड (OBOR) पहल चीन की एक बुनियादी परियोजना है। इसमें पाकिस्तान-चीन आर्थिक गलियारा भी शामिल है।

(b) डोकलाम में चीन का अतिक्रमण चीन और भारत के बीच हुए दो समझौतों का उल्लंघन है।

(c) 2017 में डोकलाम और वन बेल्ट, वन रोड पहल के मतभेद ने भारत और चीन के रक्षा व्यापार को प्रभावित किया था।

(d) वुहान अनौपचारिक बैठक असफल रही जिसके बाद अब अक्टूबर, 2019 में दूसरी अनौपचारिक बैठक हो सकती है।

Expected Questions (Prelims Exams)

1. **Identify the false statement from the following statements given in relation to India-China:-**

(a) The One Belt, One Road is a basic project of China. It also includes the Pakistan-China Economic Corridor.

(b) China's encroachment in Doklam is a violation of two agreements between China and India.

(c) In 2017, differences between Doklam and One Belt, One Road initiative affected India's and China's defense trade.

(d) The Wuhan informal meeting was a failure, after which a second informal meeting may now take place in October 2019.

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्न: ऐसे कौन-से बिंदु हो सकते हैं जिन पर भारत-चीन के मध्य परस्पर निर्भरतायुक्त (symbiotic) सम्बन्धों का विकास हो सकता है? चर्चा कीजिए। **(250 शब्द)**

What are the points at which symbiotic relations between India and China can develop? Discuss.

(250 Words)

नोट : 9 अक्टूबर को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1 (d) होगा।